मातृशक्ति के अमृतवचन

• माता भगवती देवी शर्मा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

मातृशक्ति के अमृत वचन

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मूल्य : ३.०० रुपये

विचार क्रांति अभियान शांतिकुंज, हरिद्वार

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सच्ची प्रसन्नता वह पवित्र भगीरथी प्रवाह है, जिसके समीप कुछ देर बैठ लेने भर से नवीन स्फूर्ति रग-रग में भर जाती है, चित्त हलका हो जाता है और कषाय-कडुवाहट से उत्पन्न व्यग्रता भरी गर्मी तथा भार धुल-बह जाता है।

-माता भगवती देवी शर्मा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आप एक साधन है, साध्य जीवन का आनन्द है। जितने अंशों में आप जीवन का आनन्द ले सकते हैं, उतने ही अंशों में जीवन को सार्थक बनाते हैं। आनन्द जीवन का नवनीत है। यह आपको स्वयं ही प्राप्त करना है। जब तक आप अपने विषय में उच्च धारणाएँ बनाकर संसार की कर्मस्थली में प्रविष्ट नहीं होते, तब तक आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता।

–माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन में सफलता पाने के लिए आत्म-विश्वास उतना ही जरूरी है, जितना जीने के लिए भोजन। कोई भी सफलता बिना आत्म-विश्वास के मिलना असंभव है। आत्म-विश्वास वह शक्ति है, जो तूफानों को मोड़ सकती है, संघर्षों से जूझ सकती है और पानी में भी अपना मार्ग खोज लेती है।

-माता भगवती देवी शर्मा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार में हर काम कठिन है और हर काम सरल भी। सरल वे हैं, जिन्हें खेल की तरह दिलचस्पी के साथ और अपनी क्षमता के विकास का अभ्यास समझकर किया जाता है। कठिन वे हैं, जिन्हें आशंका, उदासी और भार–बेकार की तरह किसी प्रकार पूरा किया जाता है।

–माता भगवती देवी शर्मा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने से अधिक सुखी मनुष्यों को देखकर मन में ईर्ष्या उत्पन्न मत करो, वरन् अपने से गिरी हुई दशा के कुछ उदाहरणों को सामने रखकर उनकी और अपनी दशा की तुलना करो। तब तुम्हें प्रसन्नता होगी कि ईश्वर ने तुम्हें उनकी अपेक्षा कितनी सुविधाएँ दे रखी हैं।

–माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी रुचि, इच्छा, मान्यता को ही दूसरे पर लादना, अपनी ही बात को–अपने ही स्वार्थ को सदा ध्यान में रखना अनुदारता का चिह्न है। दूसरों के विचारों, तर्कों, स्वार्थों और उनकी परिस्थितियों को समझने के लिए उदारतापूर्वक प्रयत्न किया जाय, तो अनेकों झगड़े सहज ही शान्त हो सकते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

–माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नम्र, दयालु, उपकारी और सहायक बनो। एक भी शब्द ऐसा मत कहो जिससे दूसरों को दुःख पहुँचे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

-माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुन्दर वही है, जिसका हृदय सुन्दर है। जो आकृति से बहुत सुन्दर है, जिसके शरीर का रंग और चेहरे की बनावट बहुत आकर्षक है, परन्तु जिसके हृदय में दुर्गुण और दोष भरे हैं, वह मनुष्य वास्तव में गंदा और कुरूप है।

-माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार का एक विनम्र सेवक बनने का प्रयत्न करोगे, तो सुखपूर्वक रहोगे। मालिक बनने और हुकूमत चलाने की इच्छा करोगे तो बहुत क्लेश उठाने पड़ेंगे और अंत में निराश हो उठेंगे।

—माता भगवती देवी शर्मा

www.awgp.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विपत्तियाँ सब पर आती हैं। राम, कृष्ण, ईसा, मुहम्मद, शिव, दधीचि जैसे महान् आत्माओं को विपत्ति ने नहीं छोड़ा तो हम उससे अछूते नहीं बचे रह सकते। अप्रिय अवस्था को देखकर न तो चीखें, न डरपोकों की तरह किंकर्त्तव्य-विमूढ बनें। यथाशक्य निवारण का उपाय करें और जब तक कष्ट है, तब तक अविचल धैर्य की प्रभु से याचना करें।

-माता भगवती देवी शर्मा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार में वैभव रखना, धनवान होना कोई बुरी बात नहीं है। इससे तो बहुत से शुभ कार्य हो सकते हैं। बुराई तो धन के अभिमान में डूब जाने और उससे मोह करने में है।

—माता भगवती देवी शर्मा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धन और यौवन अस्थिर हैं। छोटे से रोग या हानि से इनका विनाश हो सकता है। इसलिए इनका अहंकार न करके-दुरुपयोग न करके ऐसे कार्यों में लगाना चाहिए, जिससे भावी जीवन में सुख-शान्ति की अभिवृद्धि हो।

-माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चिन्ता और परेशानी की भट्टी में जलते हुए मानव के लिए शान्ति कहाँ? पर मैं कहूँगी कि शान्ति है। शान्ति मस्ती में, खुशमिजाजी में, परिहासपूर्ण स्वभाव में, आनंदी और उत्साही मुख मुद्रा में है।

-माता भगवती देवी शर्मा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रशंसा और यश के लिए अधिक उत्सुक न रहिए, क्योंकि यदि आप प्रतिभावान हैं तो आपको बढ़ने से कोई भी आलोचना नहीं रोक सकेगी। दूसरे की आलोचना को आंतरिक सच्ची प्रेरणा के सम्मुख कोई महत्त्व न दीजिए, वरन् जितनी भी आलोचना हो, उससे दुगुनी इच्छा शक्ति लगाकर कार्य को आगे बढ़ाते चलिए।

–माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असफलता, निराश, भूल और दुःखों से मन को पराजित न होने दीजिए। ये प्रतिकूलताएँ लोक-व्यवहार में अति साधारण बाते हैं, जो प्रत्येक महान् व्यक्ति के जीवन में आई हैं। इनको जीतकर निरन्तर कार्य करते रहकर ही मनुष्य सफलता लाभ कर सके हैं।

www.vicharkrantibooks.org

-माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना बोलना-चालना, लेन-देन, दूसरों से बोलचाल सब कुछ आपके विषय में दूसरों के मस्तिष्क में धारणाएँ निर्मित किया करती हैं। अतः अपने व्यवहार में सावधान रहिए। दूसरों के सामने अपना सबसे आकर्षक पहलू रखिए, जिसे वे देखकर आकर्षित हो सकें। एक बार आकर्षित होने के पश्चात् आपके चरित्र के गुण और योग्यता उसे स्थिर रख सकेंगे।

-माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आप अपना सत्कार्य किए जाइए। दूसरों की अनुमति, प्रेरणा, प्रोत्साहन या बढ़ावा दिलाने की क्यों प्रतीक्षा करते हैं ? प्रसन्न और सफल हम तभी हो सकते हैं, जब इन्हें उपेक्षित छोड़कर इनकी आलोचना या उत्साह की परवाह न करते हुए अपनी राह चलते रहें। अपने उद्देश्य की पूर्ति में संलग्न रहें।

–माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन से प्यार करो, किन्तु मृत्यु का भय त्याग दो। जब मरने का समय आएगा, चल देंगे। अभी से क्यों उसकी चिन्ता करें। जीवन को यदि प्यार न करोगे, तो उससे हाथ धो बैठोगे, किन्तु जीवन को आवश्यकता से अधिक प्यार करने की भी आवश्यकता नहीं।

–माता भगवती देवी शर्मा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमेशा दूसरों की नेकी और भलाई का ख्याल रखो। किसी की बुराई स्वप्न में भी मत सोचो। किसी को फरेब और जाल में फँसाकर धोखा मत दो। किसी के साथ असभ्यता से पेश मत आओ। हमेशा नेकचलन रहो।

–माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भावना की जड़ जमाने में बड़े सतर्क रहिए। पुनः-पुनः प्रयत्न कीजिए कि अपने बच्चे में दया, कोमलता, मानवता, सच्चाई, प्रेम, सहानुभूति, अनुशासन की भावनाएँ आती रहें। इन्हें बरबस बच्चों के कोमल मन में बसाइए। अच्छे-अच्छे भजन, पवित्र, कर्त्तव्य की शिक्षा देने वाली कहानियाँ उत्तमोत्तम व्यवहार द्वारा नये राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण हो संकता है।

-माता भगवती देवी शर्मा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन में उन्नति, समृद्धि व सफलता चाहने वाले व्यक्ति को घमण्ड से दूर रहना चाहिए। मनुष्य के वाँछित लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में वह बड़ा बाधक तत्त्व है। अहंकार ग्रस्त व्यक्ति का विकास रूक जाता है। उसकी प्रगति की सारी संभावनाएँ धूमिल पड़ जाती है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

-माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बड़प्पन और महानता केवल सादगी तथा शालीनता अपनाने से ही प्राप्त होती है। यह बात अलग है कि सीधी, सरल और सज्जनता की रीति-नीति अपनाकर तत्काल ही चर्चा का विषय नहीं बना जा सकता। इसमें देर लगती है, परन्तु बड़ा बनने का राजमार्ग यही है।

-माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य गलतियों से भरा हुआ है। सबमें कुछ न कुछ दोष होते हैं। इसलिए दूसरों के दोषों पर ध्यान न देकर उनके गुणों को परखना चाहिए और आपस में मिल-जुलकर एक दूसरे को सुधारने का उद्योग करते हुए प्रेमपूर्वक आगे बढ़ना चाहिए।

-माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

• तुमको दूसरा कोई अच्छी सलाह दे, उसको सुनना तुम्हारा कर्त्तव्य है, परन्तु तुम अपनी आत्मा की सलाह से काम-काज करते रहो। कभी धोखा नहीं खाओगे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

• बदला लेने का विचार छोड़कर क्षमा करना अंधकार में प्रकाश में आना है और जीते जी नरक की जगह स्वर्ग-सुख भोगना है।

-माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वासी बनिए। बिना विश्वास के काम नहीं चलता, किन्तु जिस पर विश्वास करना है उसे बुद्धि, प्रलोभन, दृढता आदि से खूब परख लो।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रत्येक वस्तु को अपनाने की और अपने को परिस्थितियों के अनुसार ढालने की क्षमता रखे। उन्हीं वस्तुओं , गुणों, व्यक्तियों, संस्थाओं तथा पुस्तकों को अपनाना सीखो, जो तुम्हारे योग्य हो।

-माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो व्यक्ति कहता है कि 'मैं संयम नहीं कर सकता' वह चरित्र की छोटी-मोटी एक भी परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकेगा। संयम ही चरित्र का मुख्य आधार है।

आत्म-नियंत्रण ही स्वर्ग द्वार है। यह प्रकाश तथा शान्ति की ओर ले जाता है। उसके बिना मनुष्य नर्कवासी है।

-माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचार, शान्ति, ध्यान और क्षमा के द्वारा क्रोध पर विजय प्राप्त करो। जो मनुष्य तुम्हारी हानि करता हो, उसके ऊपर दया करो और उसे क्षमा कर दो। उलाहने को प्रसाद समझो, उसे आभूषण जानो तथा अमृत तुल्य मानो। भर्त्सना को सह लो। सेवा, दया और ब्रह्म भावना के द्वारा विश्व प्रेम का विकास करो। जब क्रोध पर विजय प्राप्त हो जाएगी तो धृष्टता, अहंकार और द्वेष स्वयं ही नष्ट हो जायेंगे।

www.vicharkrantibooks.org

–माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्संग मानसिक उन्नति का सर्वप्रथम साधन है। सत्संग से ही मनुष्य को भले और बुरे, लाभदायक और हानिकारक, उत्कृष्ट और निकृष्ट की पहिचान होती है। इसलिए सत्संग का नियम कभी भंग नहीं करना चाहिए। अमर विद्वान और त्यागी पुरुषों का समागम नित्यप्रति न हो सके तो ऐसे महापुरुष के विचारों को उनके रचे हुए ग्रंथों में अवलोकन करना चाहिए।

—माता भगवती देवी शर्मा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसा मत कहना कि यह संसार बुरा है, दुष्ट है, पापी है, दुःखमय है। ईश्वर की पुण्य कृति जिसके कण-कण में उसने कारीगरी भर दी है, कदापि बुरी नहीं हो सकती। दुनिया दुःखमय है, यह शब्द कहकर उसकी प्रतिष्ठा पर हम लांछन लगाते हैं। ईश्वर की पुण्य भूमि में दुःख का एक अणु भी नहीं है। हमारा अज्ञान ही हमारे दुःख है।

-माता भगवती देवी शर्मा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमको परमात्मा ने जो विवेक बुद्धि प्रदान की है, उसका यही उद्देश्य है कि किसी भी पुस्तक, व्यक्ति या परम्परा की हम परीक्षा कर सकें। जो बात बुद्धि, विवेक, व्यवहार एवं औचित्य में खरी उतरे उसे ही ग्रहण करना चाहिए। बुरे व्यक्तियों की भी अच्छाई का आदर करना चाहिए और अच्छों की भी बुराई को छोड़ देना चाहिए।

www.vicharkrantibooks.org

–माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार में आचरण की महिमा सबसे अधिक है। जिस मनुष्य के कहने और करने में अन्तर रहता है, उसकी बात का प्रभाव न तो दूसरों पर पड़ता है और न वह स्वयं कोई स्थायी सफलता प्राप्त कर सकता है। जीवन में यह जानना सबसे आवश्यक बात है कि सबसे प्रमुख क्या है तथा सर्वप्रथम क्या किया जाना चाहिए।

www.vicharkrantibooks.org

–माता भगवती देवी शर्मा

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ.प्र.)

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

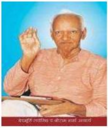

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उठाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at

www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org